

बड़े अफ़सोस की बात है कि हम खुद को हुसैनी तो ज़रूर
कहते हैं लेकिन तरीका यज़ीदियों का अपना रखा है।

मामूलाते मुहर्रम

लेखक:
नासिर मनेरी

प्रकाशक:

मनेरी फाउन्डेशन, मदरसा मनेरिया तुगलकाबाद, नई दिल्ली

मोबाइल न.9654812767, ई-मेल: nasirmaneri92@gmail.com

मुहर्रम के महीने और आशूरा के दिन की फ़ज़ीलत

मुहर्रम का महीना हिजरी साल का पहला महीना है। यह बहुत ही रहमत और बरकत वाला महीना है। इसकी दसवीं तारीख को आशूरा कहा जाता है, आशूरा का दिन बहुत ही फ़ज़ीलत वाला दिन है। इसी दिन हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबा कबूल हुई, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती जूदी पहाड़ पर पहुँची, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पैदा हुए, आप को खलीलुल्लाह का लक़ब मिला और नमरूद की आग से छुटकारा पाया। इसी दिन हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम की बलाएँ ख़त्म हुईं हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम व हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आसमानों पर उठाए गए, इसी दिन बनी इस्राईल के लिए दरिया फट गया और फिरऔन लश्कर समेत दरिया में डूब गया, और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को फिरऔन से छुटकारा मिला, इसी दिन हज़रत यूनूस मछली के पेट से सलामती के साथ बाहर आए। इसी दिन इमाम हुसैन और उनके साथियों ने मैदाने करबला में शहादत का जाम पी कर हक़ का झन्डा ऊँचा किया। (मा स-ब-त मिनरस्सुन्नह, पेज:17, गुनयतुत्तालिबीन, पेज:87) इस फ़ज़ीलत व अहमियत वाले दिन में किए जाने वाले कुछ नेक काम यहाँ बताए जा रहे हैं:

शबे आशूरा की नफल नमाज़:

आशूरा की रात में चार रक्अत नफल नमाज़ इस तरह पढ़ें हर रक्अत में अलहम्दु के बाद एक बार आयतुल कुर्सी और तीन-तीन बार सूर-ए इखलास (कुल हुवल्लाह) पढ़ें और नमाज़ के बाद 100 बार सूर-ए इखलास पढ़ें, इंशाअल्लाह गुनाहों से पाकी हासिल होगी और जन्नत में बे-शुमार ने-मतें मिलेंगी।

यौमे आशूरा का नफल रोज़ा:

आशूरा के रोज़े की बहुत फज़ीलत आई है। हदीसे पाक में है कि रसूले पाक जब मदीना तशरीफ लाए तो यहूदियों को इस दिन रोज़ा रखते देखा, पूछा: रोज़ा क्यों रखते हो? उन्होंने ने कहा: इस दिन हज़रत मूसा और उनकी क्रौम को फिरऔन से छुटकारा मिला था इसी लिए शुक्राने के तौर पर रोज़ा रखते हैं। हज़ूर ने फरमाया हज़रत मूसा की मुवाफक़त के हम ज़्यादा हक़दार हैं, फिर हज़ूर ने खुद भी रोज़ा रखा और उस का हुक्म भी दिया (बुखारी शरीफ, 1 / 656 हदीस न:2004) रसूले पाक ने फरमाया: आशूरा का रोज़ा एक साल के गुनाह मिटा देता है। (मुस्लिम शरीफ, 1 / 590 हदीस न:1162) नवीं और दसवीं दोनों दिन रोज़ा रखना चाहिए और अगर ना हो सके तो आशूरा ही के दिन रोज़ा रखें।

यौमे आशूरा के नेक काम:

आशूरा के दिन ये काम करना मुस्तहब है: रोज़ा रखना, सदका करना, नफल नमाज़ पढ़ना, एक हजार सू-रए इखलास पढ़ना, यतीमों के सर पर हाथ फेरना, अपने अहलो अयाल के रिज़क में कुशादगी करना, गुस्ल करना, सुरमा लगाना, नाखुन तराशना, मरीज़ों की बीमार-पुर्सी करना, दुश्मनों से मिलाप करना, दुआए आशूरा पढ़ना वगैरह, रसूले पाक ने फरमाया कि जो आशूरा के दिन बाल-बच्चों के खाने पीने में ज़्यादा कुशादगी करेगा यानी ज़्यादा खाना तैयार करा कर ख़ूब भर पेट खिलाएगा अल्लाह पाक साल भर तक उसके रिज़क में ख़ूब ख़ैरो बरकत अता फरमाएगा। (मा स-ब-त मिनर-सुन्नह, पेज:17)

मुहर्रम की मजिलसें:

मुहर्रम के महीने में ख़ास तौर से आशूरा के दिन मजिलस या जलसे कराना और सही रिवायतों के साथ करबला के शहीदों की बड़ाइयाँ और करबला के वाकेआत व हालात बयान करना जायज़ और सवाब का काम है हदीसे पाक में है कि जिन मजिलसों में नेक लोगों का ज़िक्र हो, वहाँ रहमत बरसती है, और करबला के वाकेआत में चूँकि सब्र, बर्दाश्त और अल्लाह व रसूल की फरमाँ बरदारी की

बेहतरीन मिसाल है, इसलिए उन्हें सुनना सुनाना सवाब का काम है। इसी तरह मीलाद शरीफ और ग्यारहवीं की महफिलें और जलसे करना ये सब जायज़ व मुस्तहब और सवाब के काम हैं। इन्हें खुलूस व मोहब्बत से करना चाहिए और इनमें अदब से हाज़िर होना चाहिए। इन महफिलों से लोगों को रोकना गुमराहों का तरीका है।

मुहर्रम की फातिहा :

मुहर्रम के दस दिनों तक ख़ास तौर से आशूरा के दिन शरबत पिलाकर, खाना खिलाकर, शीरिनी पर या खिचड़ा पका कर शुहदाए करबला की फातिहा दिलाना और उनकी रूहों को सवाब पहुँचाना ये सब जायज़ और सवाब के काम हैं और इन सब चीज़ों का सवाब यक़ीनन उनकी रूहों को पहुँचता है और इस फातिहा या ईसाले सवाब के मसअले में हनफ़ी, शाफ़ेई, मालिकी, हंबली अहले सुन्नत के चारों इमामों का इत्तेफाक़ है। (शरहुल अकाइदिन नसफिय्यह, पेज:172)

दुआए आशूरा:

दसवीं मुहर्रम को ये दुआ पढ़ने से उम्र में ख़ैरो बरकत, ज़िंदगी में फलाहो नेमत मिलती है। दुआ ये है:

“या क़ाबि-ल तौबति आ-द-म यौ-म आशूरा, या फ़ारि-ज कर्बि ज़िन्नूनि यौ-म आशूरा, या जामि-अ शम्लि याकू-ब यौ-म आशूरा, या सामि-अ दअवति मूसा व हारू-न यौ-म आशूरा, या मुगी-स इब्राही-म मिनन्नारि यौ-म आशूरा, या राफि-अ इद्री-स इ-लस्समाई यौ-म आशूरा, या मुजी-ब दअवति सालि-ह फिन्नाक़ति यौ-म आशूरा, या नासि-र सैय्यदिना मुहम्मदिन यौ-म आशूरा, या रहमानद्दुनिया वल आखिरति व रही-महुमा सल्लि अला सय्यदिना मुहम्मदिन व अला आलि सय्यदिना मुहम्मदिन व सल्लि अला जमीइल अम्बियाइ वल मुर्सलीन, वक्किज हाजातिना फ़िद्दुनिया वल आखिरति व अतिल उम-रना फी ताअति-क व महब्बति-क व रिज़ा-क व अहयिना हयातन तय्यि-बतन व तवफ़्फ़ना अलल ईमानि वल इस्लाम बिरहमति-क या अरहमर राहिमीन अल्लाहुम्म बिइज़िज़ल ह-स-नि व अख़ीहि व उम्मिही व अबीहि व जद्दिही व बनीहि फ़र्रिज अन्ना मा नहनु फ़ीहा”

फिर सात बार ये पढ़ें

“सुब्हानल्लाहि मिलअल मीज़ानि व मुन-तहल इल्मि व मब्लग़र्रिज़ा व ज़ि-नतिल अर्शि ला मल-ज-अ मिनल्लाहि इल्ला इलैहि सुब्हानल्लाहि अ-द-दशशफ़्इ वल वत्रि व अ-द-द कलिमातिल लाहित ताम्माति कुल्लिहा नस-अलु-कस सलाम-त बिरह मति-क या अरहमर्राहिमीन, वहु-व हसबुना व निअमल

वकील, निअमल मौला व निअमन नसीर, वला हौ-ल वला कुव्व-
त इल्ला बिल्लाहिल अलियिल अज़ीम, व सल्लल्लाहु तआला
अला सय्यिदिना मुहम्मदिन व अला आलिही व सहबिही व
अलल मोमिनी-न वल मोमिनाति वल मुसलिमी-न वल
मुसलिमाति अ-द-द ज़र्रातिल वुजूद, व अ-द-द मालूमातिल्लाहि
वलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन”

मुहर्रम का खिचड़ा :

आशूरा के दिन खिचड़ा पकाना ना तो फ़र्ज़ या वाजिब है ना
ही नाजायज़ व हराम। बल्कि एक रिवायत के मुताबिक़ खास आशूरा
के दिन खिचड़ा पकाना हज़रत नूह अलैहिस सलाम की सुन्नत है।
तूफ़ान से छुटकारा पाकर जब आप की कश्ती जूदी पहाड़ पर ठहरी
तो आशूरा का दिन था। आप ने कश्ती से तमाम अनाजों को बाहर
निकाला तो मटर, गेहूँ, जौ, मसूर, चना, चावल, प्याज़ वगैरह सात
क्रिस्म के अनाज मौजूद थे। आप ने उन्हें एक ही हाँडी में मिला कर
पकाया। अल्लामा क़लयूबी लिखते हैं कि “मिस्र में जो खाना आशूरा
के दिन तबीख़ुल हबूब (खिचड़ा) के नाम से पकाया जाता है इसकी
दलील यही है” (किताबुल क़लयूबी, फ़ाइदतु फ़ी यौमि आशूरा,
पेज:136)

मुहर्रम में क्या नहीं करना चाहिए?

मुहर्रम का महीना ग़म का है खुशी का नहीं। इस महीने की 10वीं तारीख को यज़ीदियों ने हमारे पैग़म्बर हज़रत महोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के नवासे इमाम हुसैन और उनके साथियों को करबला की तपती हुई रेत पर बेदर्दी से शहीद कर दिया था फिर उनके सर को तलवार की नोक पर रखकर पूरे शहर में ढोल-ताशों के साथ खुशी में जश्न का जुलूस निकाला, उनका क़ाफ़िला लूटा, बीमारों को मारा पीटा, औरतों पर अत्याचार किए, उन्हें बेपर्दा पूरा शहर घुमाया और ये बताने की कोशिश की कि हम जीत गए, हमने इमाम हुसैन को हरा दिया।

मैं पूछना चाहता हूँ मुसलमानो! कि 10वीं मुहर्रम को ढोल-ताशे, डीजे, डंके और बैण्ड-बाजे के साथ जो जुलूस निकालते हो ऐसा किस खुशी में करते हो? इमाम हुसैन को शहीद करने की खुशी में या फिर यज़ीद की जीत की खुशी में? सड़कों पर ट्यूब लाईट फोड़ना ताकि राहगीरों के पैर में चुभे, पेट्रोल पीकर आग जलाने का करतब दिखाना ताकि दुकान मकान में आग लग जाए, सड़कों पर

लाठी, डंडे, तलवार, भाले से करतब दिखाना ताकि कोई भी ज़ख्मी हो जाए, शराब गाँजा पीकर सड़कों पर उछलना-कूदना और नाचना-गाना ताकि रास्ते वाले परेशान हों ये सब किस खुशी में? क्या इस से इमाम हुसैन खुश होंगे? क्या इस से इमाम की रूह को तकलीफ नहीं पहुँचैगी?

अगर तुम्हारे घर में मय्यत हो जाए और कोई आकर ढोल, ताशे, डंके, डीजे बजाए, नाचे गाए तो तुम्हें कितनी तकलीफ होगी? ऐसे ही जिस दिन इमाम हुसैन शहीद हुए, जिस दिन सारी दुनिया गम मना रही हो, उस दिन तुम्हारी इन हरकतों पर उनकी माँ फातिमा, बाबा अली और नाना नबी को कितनी तकलीफ हो रही होगी??? तुम्हारे घर में इंतक़ाल होता है तो तुम कुरआन-ख़्वानी, मीलाद, फ़ातिहा, दुरूद और ईसाले सवाब करते हो या ढोल-ताशे, डंके-डीजे, गाने-बाजे और खेल तमाशे करते हो?

इमाम हुसैन की शहादत का जो लोग मज़ाक उड़ा रहा हों, शहादत के दिन ग़म की बजाय ख़ुशी में ढोल, ताशे, डीजे, बाजे के साथ जुलूस निकाल रहा हों, ट्यूब लाइट फोड़ कर, मुँह से पेट्रोल फूँक कर आग जला कर, लाठी, डंडे, तलवार, भाले से करतब कर के, शराब, गाँजा पीकर उछल कूद कर के जो इमाम हुसैन की रूह को तकलीफ दे रहे हों? हमें कैसे गवारा हो कि हम उन पर खाने पीने के सामान लुटाएँ, उनके खुराफाती जुलूस में शामिल हों, उन्हें पैसे

देकर इस गुनाह के काम में उनकी मदद करें? कुरआन में है: नेक काम में मदद करो, गुनाह और जुल्म के काम में मदद ना करो। और हदीस में है कि जब बुराई देखो तो अपनी हैसियत के मुताबिक रोको। लिहाज़ा हमें बताया जाए कि 10वीं मुहर्रम जैसे मुबारक दिन में खेल तमाशे, उछल कूद और बेहूदा करतब कर के इमाम हुसैन की रूह को तकलीफ देना सवाब का काम है या गुनाह का? जब ये गुनाह का काम है तो जो इनमें पैसे देकर, इनमें खाने पीने के सामान लुटाकर या इनके साथ घूमकर इनका हौसला बढ़ा रहा है वो सवाब का काम कर रहा है या गुनाह का?

बड़े अफसोस की बात है कि आज हम अपने आप को हुसैनी तो ज़रूर कहते हैं लेकिन तरीका हम ने यज़ीदियों का अपना रखा है। इमाम हुसैन को शहीद करने और क़फ़िला लूटने के बाद जो काम यज़ीदियों ने किया था वो आज हम करने लगे हैं। ज़रा दिल पर हाथ रखकर सोचो कि कल क़यामत के दिन अगर इमाम हुसैन के नाना जान ने कहा कि मेरे नवासे को शहीद करने और क़फ़िला लूटने के बाद जश्न तो यज़ीदियों ने मनाया था तुम ने भी उन्हीं का तरीका अपना लिया??? जाओ आज तुम्हारा भी वही हाल होगा जो यज़ीदियों का होगा... तो उस वक़्त क्या करोगे??? इसीलिए आज भी वक़्त है यज़ीदियों का तरीका छोड़कर हुसैनी तरीका अपना लो। अल्लाह पाक हमें अच्छी बातों पर अमल की तौफ़ीक़ दे।